Vol 6 Issue 3 September 2016

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor :4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 3 | September - 2016

GRT Golden Research Thoughts

"अनुसूचित जातियों के शैक्षिक विकास का अध्ययन"

डॉ. रमेश प्रसाद पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक शिक्षाशास्त्र , श्रीयुत महाविद्यालय, गंगेव, रीवा (म.प्र.)

सारांश

किसी भी राष्ट्र एवं उनके नागरिकों के चहुँमुखी विकास के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण तत्व है। देश के संविधान और मध्यप्रदेश की जन शिक्षा अधिनियम दोनों इस बात पर जो देते हैं कि ६ से १४ वर्ष का प्रत्येक बालक स्कूल जाये और अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करे। यह हर एक बच्चे का मौलिक अधिकार भी है, लेकिन ऐसे कई बच्चे हैं जिन्हें अपनी शिक्षा पूर्ण करने का अवसर ही नहीं मिल पाता ऐसे बच्चों में अनुसूचित जाति के बच्चों की संख्या बहुत अधिक है। अनुसूचित जातियों की शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करना हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

मुख्य शब्द – अनुसूचित जाति, शिक्षा, एवं मौलिक अधिकार ।

प्रस्तावना –

''शिक्षा'' शब्द का मूल 'शिक्ष विद्योपादाने' धातु है। तद्नुसार 'शिक्षते उपादीयते विद्या यया सा शिक्षा' अर्थात् जिसके द्वारा विद्या का उपादान किया जाय वह शिक्षा है। शिक्षा से जिस विद्या की प्राप्ति की जाती है उसके स्वरूप का विवेचन करते हुए श्रीगुरुचरण मधुसूदन झा महाभाग 'ब्रह्मसमन्वय' में कहते हैं कि 'विद्यास्ति ज्ञानविज्ञानदर्शनः संस्क्रियात्मनि' अर्थात् शिक्षा के लक्ष्य ज्ञान-विज्ञान एवं दर्शनों से आत्मा में एक प्रकार का संस्कार उत्पन्न करना विद्या है। दूसरे शब्दों में आत्मा को संस्कारित करना ही शिक्षा का मुख्य लक्ष्य है। आर्य शास्त्रों में अश्व-शिक्षा, गज-शिक्षा, मृग-शिक्षा, पक्षि-शिक्षा आदि अनेक उपादेय शिक्षाएँ प्रसिद्ध हैं। मानव विभिन्न मतवादों की परस्पर विरुद्ध शिक्षाओं से शिक्षित होने पर भी जब तक सत्-शिक्षा से शिक्षित नहीं होता तब तक वह यथाजात असंस्कृत, अपूर्ण, अनुन्नत, रुग्ण होने से अज्ञ (अशिक्षित) कोटि में परिगणित होता है। दूसरे शब्दों में वह अशिक्षित ही हैं। अतः वेद की

दृष्टि से यथाजात प्रबुद्ध, संस्कृत, विकसित, उन्नत, नीरोग एवं पूर्ण मानव बनाना ही शिक्षा का मूल उद्देश्य एवं महत्व हैं।

मानव सभ्यता के विकास का आधार शिक्षा है। पाषाण युग से लेकर वर्तमान तक मानव ने जो भी प्रगति की है वह मात्र शिक्षा के कारण ही संभव हो सकी है। समय के साथ सामाजिक परिवर्तन अवश्यंभावी है। इस परिवर्तन के प्रति मनुष्य को सामंजस्य करना आवश्यक है तभी वह निर्बाध रूप से अपना जीवन इस संसार में व्यतीत कर सकता है – "शिक्षा सतत् रूप से चलने वाली प्रक्रिया है।"

अनुसूचित जातियों की जागरूकता में कमी आर्थिक दैन्यता, सामाजिक रूढ़ियाँ इन्हें शिक्षा से दूर रखी जिनके कारण ये शैक्षिक रूप से पिछड़े ही रहे। कोई भी समाज तभी प्रगति कर सकता है जब वह शिक्षित हो क्योंकि शिक्षा के द्वारा प्रगतिशीलता, चिन्तन, आत्मनिर्भरता आदि गुणों का विकास होता है जो किसी भी समाज के उन्नति का मूल आधार है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके प्रभाव से व्यक्ति सुखी स्वस्थ्य जीवनयापन एवं समृद्धि प्राप्त कर सकता है। मानव विकास में शिक्षा की अहम भूमिका है। कोई भी देश तभी आत्मनिर्भर, प्रगतिशील एवं समृद्ध हो सकता है जब वहाँ के नागरिक शैक्षिक रूप से संपन्न हो। समाज के सभी वर्गो में जो आर्थिक, राजनैतिक या सामाजिक असमानता पायी जाती है वह शिक्षा के स्तर के विभिन्नता के कारण ही होती है। यदि देश को विकसित एवं सम्पन्न राष्ट्र की श्रेणी में स्थापित करना है तो सर्वप्रथम हमें समाज के सभी वर्गो को शिक्षित करना अनिवार्य होगा। शिक्षा की महत्ता एवं आवश्यकता बताते हुये विवेकानन्द जी ने कहा है – "हमें उस शिक्षा की आवश्यकता हैं जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है मस्तिष्क की शक्ति बढती हैं और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।"

भारत वह देश है जहाँ नालंदा, तक्षशिला विक्रमशिला और उदंतपुरी जैसे विश्वविख्यात विश्वविद्यालय हुआ करते थे। जिनमें विश्व के कोने-कोने से लोग शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से आते थे। लेकिन यह बात सुदूर अतीत की है। अब परिस्थितियाँ सर्वथा भिन्न है। ब्रिटेन के प्रतिष्ठित अखबार 'द टाइम्स' ने वर्ष २००६ में २०० सबसे प्रतिष्ठित संस्थानों की सूची प्रकाशित की थी। जिसमें विकसित देश को छोड़कर चीन के ६ हांगकांग के ४ तथा भारत दक्षिण कोरिया एवं इजराइल के ३-३ मलेशिय के २ तथा ताइवान, थाईलैण्ड, मैक्सिको, सिंगापुर और रूस के १-१ विश्वविद्यालय शामिल थे। जबकि वर्ष २००६ में श्जीम ज्पउमेश ने मात्र १०० विश्वविद्यालयों की सूचित प्रकाशित की थी, जिसमें भारत के किसी उच्च शिक्षण संस्थान का नाम शामिल

नहीं था। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि राष्ट्रों के विकास तथा उन्नति में उच्च शिक्षा की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही है। कहा जा सकता है कि कोई भी राष्ट्र उच्च शिक्षा को नजर अंदाज करके उन्नति और विकास की अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकता है।

विश्लेषण –

भारत में अनुसूचित जाति समाज आज भी परम्परागत जीवन यापन करने के आदी है। यह एक ऐसा समाज है जो आधुनिकता से परे अपनी रूढ़िगत मान्यताओं को लेकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जीवन यापन कर रहा है। यह समाज आज भी गरीबी झेल रहा है। देश के दुर्गम क्षेत्रों में जीवन यापन कर रहा है। आधुनिक साधनों की कमी इन क्षेत्रों में है जहॉ इस समाज के लोग निवासरत हैं। यह एक ऐसा वर्ग है जिसे न्यूनतम आवश्यकताओं से ही अपनी शारीरिक उपक्रमों द्वारा आवश्यकता की वस्तुएँ तैयार करनी पड़ती है।

अनुसूचित जातियों का एक वर्ग परिवर्तन के भंवर में फंसा है। धर्मान्तरण के सम्मोहन से ग्रसित अनुसूचित जाति समाज छिन्न-भिन्न हो रहा है तथा दूसरा वर्ग अपनी संस्कृति और अस्मिता के प्रति अधिक सजग है। अनुसूचित जाति शोषण का शिकार है, शोषण कई कारणों से हो रहा है। अनुसूचित जातियाँ छली ठगी जा रही है। इतना सब कुछ होते हुए भी जनजातियाँ अपनी सामाजिक जीवन विधि और परिवेश में परिवर्तन नहीं चाहती। इन वर्गो के कल्याण के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकारों ने कई प्रकार की उपागम बताऐ है जो इस प्रकार हैं-

प्रशिक्षण एवं शिक्षण व पथ प्रदर्शन हेतु –

अनुसूचित जाति एवं जनजातियों को रोजगार में सहायता देने के लिए दो कार्यक्रम परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र तथा शिक्षण व पथ प्रदर्शन केन्द्र प्रारम्भ किए गए हैं।

छात्रवृत्तियाँ –

अनुसूचित जाति के छात्रों को उनके संरक्षकों की आय के आधार पर मैट्रिकोत्तर छात्रवृत्तियाँ भी दी गई हैं। मैट्रिक से ऊपर की कक्षाओं के लड़कों के लिए १००० रूपये और लड़कियों के लिए १२०० रूपये प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति देने की व्यवस्था है।

बालिका छात्रावास –

जिन क्षेत्रों में अनुसूचित जातियों की छात्राओं के लिए पर्याप्त सुविधाएँ नहीं हैं वहाँ नए बालिका छात्रावास बनाने या उनका विस्तार करने के प्रयत्न किए जायेगें।

विदेशों में पढ़ने वालों के लिए छात्रवृत्तियाँ –

१९५५ से ही विदेशों में पढ़ने वाले अनुसूचित जाति के मेघावी छात्रों को ये छात्रवृत्तियाँ दी जा रही है। यह छात्रवृत्ति प्रतिवर्ष अनुसूचित जाति के ६ छात्रों को दी जाती है।

सहकारी समितियाँ –

अनुसूचित जातियों का शोषण रोकने के लिए सरकार की मदद से जनजातीय क्षेत्रों में वनश्रम, बहुउद्देशीय श्रम, ठेका एवं निर्माण, क्रय-विक्रय तथा साज सहकारी समितियों की व्यापक मात्रा में स्थापना की गई है। जो कि सही दिशा में एक सही कदम है।

निष्कर्ष – अन्ततः यह कहना समीचीन होगा कि भारतवर्ष में आजादी के बाद आधुनिकीकरण के प्रभाव से शैक्षिक व्यवस्था में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है तथा समसामयिक परिप्रेक्ष्य में इस दिशा में शिक्षा सुधार की अनन्त अपेक्षाएँ निरन्तर बनी हुई है। जब तक सम्पूर्ण भारत शैक्षिक मूल्यों की परिधि में दक्षता प्राप्त नहीं कर लेता तब तक भारतीय समाज में समग्र उत्थान सम्भव नहीं होगा।

संदर्भ –

१.भारत में नारी शिक्षा, जे.सी. अग्रवाल, वर्ष २००६
२.शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त, पाठक एवं त्यागी, वर्ष २०१०
३.द वर्ल्ड क्राइसिस इन एजूकेशन, फिलिप एच कोपन्स, वर्ष २०१०
४.ओलिव बैक्स-दि सोसियोलाजी आफ एजुकेशन, न्यूयार्क, वर्ष २००८
५.महादेव प्रसाद – महात्मा गांधी का समाज दर्शन, हरियाणा साहित्य अकादमी प्रकाशन चण्डीगढ़।
६.सिन्हा डॉ. पी.आर.एन. एवं डॉ. इन्दूवाला – श्रम एवं समाज कल्याण, भारतीय भवन ठाकुर वाडी रोड पटना २०००।
७.अनुसंधान परिचय, पारस नाथराम, वर्ष २००६
८.रीवा : सांख्यकीय पुस्तिका, जनसम्पर्क विभाग, वर्ष २०१२

डॉ. रमेश प्रसाद पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक शिक्षाशास्त्र , श्रीयुत महाविद्यालय, गंगेव, रीवा (म.प्र.)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org